सिलाई का काम पहले औरतें करती थीं, लेकिन जब से सीने की मशीन आयी, तब से वह काम मर्दों ने ले लिया। 'टेलरों' की दूकानें खड़ी हो गयीं। मैं उस मशीन के खिलाफ नहीं हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि वह काम औरतों के हाथ में रहे। एक जमाना था, जब बहनें बुनकाम करती थीं और भाई खेती करते थे। लेकिन अब औरतों के हाथ में सिर्फ कांडी, नाली भरने का काम रहा है। बुनाई का काम उनके हाथों से चला गया है। इसका नतीजा यह हुआ कि औरतों की हालत गुलाम के जैसी बन गयी है। चरखे को पालिश करने का काम औरतें कर सकती हैं, इसलिए ऐसे सब काम औरतों को दिये जायँ, आज जो मर्द ऐसे काम करते हैं, उनको हटाया न जाय, लेकिन नये काम शुरू करने हैं तो वे औरतों को दिये जायँ। औरतों के लिए घर से बाहर निकलना मुश्किल होता है। यहाँपर पर्दा भी है। इसलिए जो काम औरतें आसानी से कर सकती हैं, ऐसे काम उन्हें दिये जायँ।

कौमवाली बात तोड़ती है

आज कुछ सिख भाई हमसे मिलने आये थे। उन्होंने अपनी शिकायतें हमारे सामने रखीं। उनकी शिकायतों में से जो सही होंगी, उनको सरकार के सामने पेश करने की बात हमने कही। कश्मीर में अब तक २०-२५ जमातों के साथ हमारी अलग-अलग बात हुई है। हर जमात ने अपना-अपना मुतालबा पेश किया। सिया, पण्डित, शरणार्थी, सिख वगैरह सबने अपनी-अपनी बातें कीं। हमने कहा कि हम सिर्फ अपनी कौम की ही फिक्र करेंगे तो ताकतें टकरायेंगी और मसला हल नहीं होगा, इसलिए सारे गाँव को एक समझकर गाँव की मुसीबतें दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। एक कौम के भाइयों ने कहा कि मिनिस्टरी में हमारा कोई नुमाइन्दा नहीं है। मैंने कहा कि मैं इस बात को कत्तई नहीं मानता कि हर कौम का नुमाइन्दा मिनिस्टरी में रहे। कौमवाली बात देश की ताकत तोड़ने-वाली है।

कश्मीर में सारे कारकून मुख्तलिफ सियासी जमातों में बँटे हुए हैं। वे बाबा का कुछ काम कर देते हैं, लेकिन अपनी पार्टी को या खुद को उसका फायदा मिलेगा, इसलिए करते हैं। खालिस खिदमत करनेवाला कौन है? खिदमत करके उसमें से फायदा उठाने की कोशिश हो तो वह सच्ची खिदमत नहीं है। खिदमत के लिए ही खिदमत करनी चाहिए। या जैसे कुरानशरीफ में कहा है "वजुहुल्लाह" के लिए, अल्लाह के चेहरे के दर्शन के लिये खिदमत करनी चाहिए। पार्टीवाले काम करते हैं तो सिर्फ अपना काम बने, इतना ही उनका मकसद नहीं रहता, बल्कि दूसरे का काम बिगड़े, यह भी वे चाहते हैं। दूसरे की राह में रोड़े अटकाने का काम भी वे करते हैं। बीस लाख की आबादी-वाले कश्मीर-वैली जैसे छोटे से सूबे में इतनी अलग-अलग पार्टियाँ काम करती हैं और उनका एक-दूसरे पर भरोसा भी नहीं है! एक कुछ बात कहे और उसमें कुछ सच्चाई हो तो भी दूसरी पार्टीवाले उसे कबूल नहीं करेंगे। हर पार्टीवाले समझते हैं कि दूसरे जो बोलते हैं, उनकी तरफ तवज्जुह देने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि उनका कुल काम गलत है। जहाँ इस तरह चलता है, वहाँ तरक्की नहीं हो सकती।

पार्टियों की बात सर्वोदय के खिलाफ है। सर्वोदय में हम पार्टी, जबान, मजहब, जाति इन सबका खयाल नहीं करते, कुल का खयाल करते हैं। इन्सान का इन्सान के नाते खयाल करते हैं। कुल के भले की बात सोचते हैं। मैं समझता हूँ कि कश्मीर के लिए और हिन्दुस्तान के लिए इससे बेहतर चीज दूसरी कोई नहीं हो सकती है, इसलिए आप लोग अपनी-अपनी पार्टी छोड़कर इस काम में आयेंगे तो सबका भला होगा। ◆◆◆

स्वागत-प्रवचन

पठानकोट (पंजाब) २२-९-'५९

पूर्ण या परिपूर्ण? एक जीवन-दृष्टि

आज तो नुमाइन्दों के हाथ में सब कुछ है। मिलिटरी उनके हाथ में, व्यापार-व्यवहार उनके हाथमें, शिक्षण, समाज-सुधार, धर्म-सुधार म्यूजिक, साहित्य अकादमी—सब कुछ उनके हाथ में है। याने जीवन की कुल की कुल शाखाएँ हम उनके हाथ में सौंपते हैं। मगर वे ऐसे कौन अक्लवाले होते हैं, जो यह सब करने में समर्थ हों? उनके हाथ में सब कुछ सौंपकर लोग अपने हाथ में सिर्फ खाना-पीना रखते हैं। वह भी नुमाइंदों पर सौंपते तो ठीक होता। कौन-सा काम खुद करना, कौनसा मुनीम से करवाना, कौन-सा नौकर से करवाना, यह अक्ल सेठजी नहीं रखेंगे तो वे नाममात्र के सेठजी रहेंगे और सारी सत्ता मुनीम के हाथ में आयेगी। इसलिए हमने जो डेलिगेटेड डेमोक्रेसी चलायी है, जिसमें सारी की सारी सत्ता नुमाइन्दों को सौंपी जाती है, उसके बजाय हम यह करें कि मुख्य सत्ता अपने हाथ में रखकर चन्द बातें नुमाइन्दों को सौंपें।

को-ऑपरेशन बनाम ऑपरेशन

गाँव-गाँव के लोगों को इकट्ठा होकर अपना कारोबार चलाना होगा। विकेन्द्रित राज्य-रचना, विकेन्द्रित समाज-रचना और विकेन्द्रित अर्थ-रचना करनी होगी। ऊपर की सत्ता में सिर्फ जोड़ने की बात रहे, बाकी सारी सत्ता गाँव की हो। गाँव-गाँव स्वराज्य का एक छोटा नमूना हो। गाँव-गाँव में पूर्ण स्वराज्य लाया जाय। जैसा उपनिषद् के ऋषि गाते हैं—'पूर्णमदः पूर्णमिदम्'—यह भी पूर्ण है, वह भी पूर्ण है। इस तरह हमें जगह-जगह पूर्णों का नमूना पेश करना चाहिए। इन पूर्णों को जोड़ने-वाला एक परिपूर्ण भी रहे। आज तो अपूर्णों को जोड़कर पूर्ण बनाने की बात चलती है। शहरवाले लंगड़े हैं और गाँववाले अन्धे। लंगड़ा अन्धे के कन्धे पर बैठता है और मार्गदर्शन करता है। शहरवाले गाँववालों से कहते हैं कि तुम हमारी अक्ल से चलो। तुम्हारा और हमारा को-ऑपरेशन होगा। लेकिन इस को-ऑपरेशन में दोनों का ऑपरेशन चल रहा है। यह भी मारा जाता है और वह भी। इस तरह पंगुओं का, अक्षमों का, असमर्थों का, अपूर्णों का सहयोग करके पूर्ण बनाने की बात चलाना ठीक नहीं है। ऐसे अपूर्णों के सहयोग से किसी का समाधान नहीं हो सकता। [गतांक ११६ पृष्ठ ७१४ का शेषांश] ◆◆

अनुक्रम

१. सोचिये, मनुष्य के...	सांबा	१५ सितम्बर '५९	पृष्ठ ७१५
२. सर्वोदयवाले इन्सान का...	पामपुर	७ अगस्त '५९	,, ७१७
३. पूर्ण या परिपूर्ण?..	पठानकोट	२२ सितम्बर '५९	,, ७१८

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, धाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी